सूरह — एक कहानी

सूरह अल-'आदियात

दौड़ने वाले घोड़े

पूरा सफ़र — वो घोड़े जो हमें शर्मिंदा करते हैं —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 100 • 11 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

वल्-'आदियाति ज़ब्हा
1. क़सम है हाँपते हुए दौड़ने वालों की।

फ़ल्-मूरियाति क़द्हा
2. फिर चिंगारियाँ निकालने वालों की।

फ़ल्-मुग़ीराति सुब्हा
3. फिर सुबह धावा बोलने वालों की।

इन्नल्-इंसान लि-रब्बिही ल-कनूद
6. बेशक इंसान अपने रब का बड़ा ना-शुक्रा है।

व इन्नहू 'अला ज़ालिक ल-शहीद
7. और बेशक वो ख़ुद इस पर गवाह है।

व हुस्सिल मा फ़िस्-सुदूर
10. और जो सीनों में है वो निकाल लिया जाएगा।

गर्द के बादल में पाँच क़समें

बेटा, यह सूरह क़ुरआन के सबसे मंज़र-कश हिस्सों में से एक से शुरू होती है। आँखें बंद कर के उन आवाज़ों को अपने ऊपर असर करने दीजिए, क्योंकि अरबी के लफ़्ज़ ख़ुद सरपट दौड़ रहे हैं।

'वल्-'आदियाति ज़ब्हा — क़सम है दौड़ने वालों की, हाँपते हुए' — घोड़े पूरी रफ़्तार से दौड़ते हुए, और 'ज़ब्ह' उनके भारी, ज़ोर लगाते साँस की वो मख़्सूस आवाज़ है जो हमला करते वक़्त निकलती है।

'फ़ल्-मूरियाति क़द्हा — फिर आग की चिंगारियाँ निकालने वालों की।' बेटा, लोहे के सुम तेज़ रफ़्तार में पत्थर पर पड़ते हैं तो चिंगारियाँ निकलती हैं — घोड़े पथरीले मैदान पर इतनी शिद्दत से दौड़ रहे हैं कि अँधेरे में उनके नीचे से आग उड़ रही है।

'फ़ल्-मुग़ीराति सुब्हा — और सुबह धावा बोलने वालों की।' पहली रोशनी में हमला,

उस लम्हे में जब दुश्मन सबसे कम तैयार होता है।

'फ़-असरन बिही नक़'आ — फिर उससे गर्द का बादल उठाते हुए — फ़-वसत्न बिही जम'आ — और उसी के साथ किसी जमाअत के बीच में घुस जाते हुए।' बेटा, गर्द उठती है, और घोड़े सीधे जमा शुदा दुश्मन के क़ल्ब में उतर जाते हैं।

पाँच आयतें, और आप देख सकते हैं, सुन सकते हैं, और तक़रीबन महसूस कर सकते हैं: हाँपना, चिंगारियाँ, सुबह, गर्द, और टकराव।

अब बेटा — अल्लाह जंगी घोड़ों की क़सम क्यों खाएँ? उस ख़ूबी की वजह से जिसे वो नुमायाँ कर रहे हैं। देखिए ये जानवर क्या कर रहे हैं। वो उस वक़्त तक दौड़ रहे हैं जब तक साँस फटने न लगे, पत्थर से चिंगारियाँ निकाल रहे हैं, ख़तरे में घुस रहे हैं — उस मालिक के लिए जो उन्हें खिलाता है। मुकम्मल इताअत। मुकम्मल जान-फ़िशानी। घोड़ा अपना सब कुछ दे देता है, उस इंसान के लिए जो उसे सिर्फ़ चारा और पानी देता है।

और फिर अल्लाह घोड़े से हट कर इंसान की तरफ़ आते हैं।

इंसान अपने रब का ना-शुक्रा है

'इन्नल्-इंसान लि-रब्बिही ल-कनूद — बेशक इंसान, अपने रब का, कनूद है।'

बेटा, 'कनूद' एक भारी लफ़्ज़ है। अरब 'कनूद' उस बे-ज़मीन के लिए बोलते थे जो कितनी ही बारिश पाए, बदले में कुछ नहीं देती। और हसन बसरी (रह0) ने कनूद की तफ़्सीर की: वो जो मुसीबतों को गिनता है और एहसानात भूल जाता है।

बेटा, इस तारीफ़ पर थोड़ा बैठिए, क्योंकि यह हमारी अपनी तस्वीर है। किसी से पूछिए कि उसका साल कैसा गुज़रा, वो आपको बीमारी बताएगा, नुक़सान, मायूसी, और वो शख़्स जिसने उसके साथ ज़्यादती की। वो उन तीन सौ साठ दिनों का ज़िक्र नहीं करेगा जब वो साँस लेते हुए उठा, उस खाने का नहीं जो कभी ख़त्म नहीं हुआ, उन आँखों का नहीं जो अभी भी देखती हैं, उन बच्चों का नहीं जो सलामत घर लौट आए।

एक तकलीफ़ सालों याद रहती है; दस हज़ार नेमतें इसलिए नज़र नहीं आतीं कि वो

कभी रुकी ही नहीं।

और अब उस मुक़ाबले की चुभन महसूस कीजिए जो सूरह ने बनाया है। घोड़ा अपने आपको उस मालिक के लिए थका देता है जो उसे घास देता है। और इंसान — जिसे आँखें, कान, सेहत, घर वाले, रिज़्क़, हिदायत, और एक ऐसा रब मिला जो उसे बार बार माफ़ करता है — वो 'कनूद' है। बेटा, सूरह नर्मी से और बिल्कुल चुभते हुए कह रही है: जानवर तुमसे ज़्यादा शुक्र-गुज़ार है।

'व इन्नहू 'अला ज़ालिक ल-शहीद — और बेशक वो ख़ुद इस पर गवाह है।'

बेटा, यह क़ुरआन की सबसे असहज करने वाली आयतों में से है। वो ख़ुद अपनी ना-शुक्री का गवाह है। यानी: अंदर से वो जानता है। किसी को उसे साबित नहीं करना पड़ता। जो शख़्स अपनी ज़िंदगी की शिकायत करता है, वो अपने ख़ामोश लम्हों में बिल्कुल ठीक जानता है कि उसे कितना दिया गया है। वही अंदर का इल्म ख़ुद गवाही देगा।

'व इन्नहू लि-हुब्बिल्-ख़ैरि ल-शदीद — और बेशक वो ख़ैर की मोहब्बत में शदीद है — सख़्त, शिद्दत वाला।'

बेटा, ग़ौर कीजिए अल्लाह ने यहाँ माल के लिए कौन सा लफ़्ज़ चुना: 'ख़ैर' — भलाई। क्योंकि हम उसे यही कहते हैं। हम 'मेरा पैसा' नहीं कहते; हम कहते हैं 'मेरा सहारा', 'मेरी हिफ़ाज़त', 'मेरी नेमत'। और मोहब्बत को 'शदीद' कहा गया — शदीद, बे-लगाम, जकड़ने वाली।

बेटा, आयत यह नहीं कह रही कि माल बुरा है। यह कह रही है कि मसला उसके लिए हमारी मोहब्बत की शिद्दत है — वो मोहब्बत जो उससे ज़्यादा है जिसने वो दिया।

जब सीनों का माल निकाल लिया जाएगा

और फिर सूरह वही करती है जो वो हमेशा करती है — आपकी नज़र हाल से उठा कर अंजाम पर ले जाती है: 'अ फ़-ला य'लमु इज़ा बु'सिर मा फ़िल्-क़ुबूर — क्या वो नहीं जानता — जब जो कुछ क़ब्रों में है उंडेल दिया जाएगा?'

बेटा, 'बु'सिर' — पलट दिया गया, ख़ाली कर दिया गया, अंदर का माल बाहर बिखरा दिया गया। जो कुछ क़ब्रों ने निगला था, सब खुले में ला दिया गया।

'व हुस्सिल मा फ़िस्-सुदूर — और जो सीनों में है वो हासिल कर लिया जाएगा, निकाल लिया जाएगा।'

बेटा, यही वो आयत है जो इस सूरह से ले कर जानी चाहिए। 'हुस्सिल' का मतलब है खींच निकालना, छान कर अलग करना, किसी चीज़ का ख़ुलासा निकाल लेना — जिस तरह अनाज भूसे से अलग किया जाता है, या सोना कच्ची धातु से निकाला जाता है।

जोड़ी देखिए: क़ब्रें जिस्म उगलती हैं, और सीने राज़। और इनमें से अल्लाह किसको असल वाक़िआ कह रहे हैं? दूसरे को।

क्योंकि असल शख़्स वो नहीं जो मिट्टी में पड़ा है, बेटा — असल वो है जो सीने में था: निय्यतें, सर-ए-आम सदक़े के पीछे छुपा हुआ ग़ुरूर, किसी बे-निशान नेकी के पीछे का ख़ामोश इख़्लास, एक मुहज़्ज़ब मुस्कुराहट के पीछे बीस साल से सँभाला हुआ बुग़्ज़, वो अल्लाह की मोहब्बत जिसका किसी को पता नहीं था।

इस दुनिया में हमारा फ़ैसला हमारी सतह से होता है। लोग चंदा देखते हैं, निय्यत नहीं; नमाज़ देखते हैं, दिल की हाज़री नहीं; मुस्कुराहट देखते हैं, उसके पीछे की नफ़रत नहीं। उस दिन, बेटा, सतह फेंक दी जाएगी और अंदर का माल निकाल लिया जाएगा।

'इन्न रब्बहुम बिहिम यौम-इज़िल्-ल-ख़बीर — बेशक उनका रब, उनके बारे में, उस दिन, पूरी तरह बाख़बर है।'

बेटा, नाम देखिए: अल-ख़बीर — वो जो चीज़ों की अंदर वाली हक़ीक़त से, सतह के नीचे की छुपी तफ़सीलात से वाक़िफ़ हैं। और तरकीब देखिए: 'उनका रब, उनके बारे में, उस दिन' — वो उस दिन कोई नई बात नहीं सीख रहे; आयत का मतलब यह है कि उनका मुकम्मल इल्म उस दिन ज़ाहिर हो जाएगा, सबके सामने खुल जाएगा।

तो सूरह का सफ़र मुकम्मल हुआ, बेटा: यह उन घोड़ों से शुरू हुई जो उस मालिक के

लिए अपना सब कुछ दे देते हैं जो उन्हें घास देता है, और यह उस इंसान के सीने के ख़ाली किए जाने पर ख़त्म होती है जिसे उस रब ने सब कुछ दिया। इन दो नुक़्तों के दरमियान वही सवाल है जो पूरी सूरह आपसे पूछ रही है: आपके सीने से क्या निकलेगा?

और इसका जवाब कैसे दीजिए, बेटा — मुसीबतों के बजाय एहसानात गिनना शुरू कीजिए। सिर्फ़ यही एक आदत 'कनूद' का इलाज है। हर रात तीन चीज़ें नाम ले कर गिनिए जो अल्लाह ने उस दिन आपको दीं। एक शुक्र-गुज़ार दिल वो वाहिद चीज़ है जो आप अभी अपने सीने में डाल सकते हैं और बाद में उसके निकाले जाने पर ख़ुश होंगे।

इस सूरह से क्या सीखा

1. एक जंगी घोड़ा उस मालिक के लिए ख़ुद को थका देता है जो उसे चारा देता है — अपनी कोशिश उस रब के लिए नापिए जिसने आपको सब कुछ दिया।

2. 'कनूद' मुसीबतें गिनना और एहसानात भूल जाना है — इंसानी दिल की सबसे आम बीमारी।

3. आप ख़ुद अपने गवाह हैं: अंदर से आप पहले ही जानते हैं कि आपको कितना दिया गया है।

4. माल मसला नहीं; उसके लिए हमारी जकड़ने वाली शिद्दत मसला है।

5. क़ब्रें जिस्म उगलती हैं, मगर सीने राज़ — और फ़ैसला उसी अंदर के माल पर होगा।

6. अपनी निय्यतें अभी साफ़ कर लीजिए, क्योंकि उस दिन सतह फेंक दी जाएगी और ख़ुलासा निकाल लिया जाएगा।

7. ना-शुक्री का इलाज एक रोज़ाना आदत है: सोने से पहले उसकी तीन नेमतों के नाम लीजिए।

या ख़बीर, हमारे छुपे हुए नफ़्स को हमारे ज़ाहिर से बेहतर बना दीजिए, और हमें उस ज़ात का ना-शुक्रा होने से बचाइए जिसने हमें सब कुछ दिया। आमीन।